

Prof. Pankaj Kr. Gupta  
 Assistant Professor (Economics)  
 R.B.G.R. College, Maharajganj

TDC-I Economics (Hons.)  
 Paper-I Micro Economics  
 Module IV - Market Structure & Pricing

### Topic - Equilibrium of the firm under Monopolistic Competition - Long run Period

दीर्घकाल में फर्म का साम्य अथवा समूह सन्तुलन

(1) असामान्य लाभ नहीं - दीर्घकाल में समय इतना अधिक होता है कि फर्म माँग में होने वाले परिवर्तनों के अनुसार अपनी प्रतिक्रिया को समायोजित कर सकती है। फर्म अपने आकार में परिवर्तन कर सकती है; स्थिर साधनों में परिवर्तन किया जा सकता है और नई फर्मों की स्थापना की जा सकती है। अतः दीर्घकाल में किसी भी फर्म को असामान्य लाभ प्राप्त नहीं हो सकता क्योंकि -

(a) यदि फर्मों को असामान्य लाभ प्राप्त होता है तो प्रवेश की स्वतंत्रता के कारण नई फर्में बाजार में प्रवेश करेंगी। नई फर्मों के आ जाने से कुल माँग विभिन्न फर्मों में बँट जाएगी और पहले की अपेक्षा प्रत्येक फर्म को कम हिस्सा प्राप्त होगा, कुल शक्ति में शक्ति हो जाएगी, फलस्वरूप कीमतें नीचे गिरेंगी। फर्मों का प्रवेश उस समय तक चलेगा जब तक कि असामान्य लाभ समाप्त नहीं हो जाता।

(b) नई फर्में बाजार में अपनी वस्तुओं की माँग का निर्माण करने के लिए कम कीमत निर्धारित करेंगी जिसका प्रभाव विद्यमान फर्मों की बिक्री पर पड़ेगा। अतः पुरानी फर्मों को भी अपनी कीमतों में

कमी करनी पड़ेगी जिसके फलस्वरूप नये व पुराने विक्रेताओं की कीमतें कम होने के कारण असामान्य लाभ समाप्त हो जाएगा।

(1) असामान्य लाभ समाप्त होने का तीसरा कारण यह है कि दीर्घकाल में बहुत-सी नई फर्मों बाजार में प्रवेश करती हैं क्योंकि प्रवेश की स्वतंत्रता होती है और थोड़े से प्रजीगत व्यय के द्वारा उत्पादन शुरू किया जा सकता है। फर्मों की संख्या बढ़ने के कारण उत्पादन के साधनों की मांग बढ़ेगी, उनकी कीमतें बढ़ेंगी। अतः औसत कुल उत्पादन लागत में भी वृद्धि होगी। औसत लागत बढ़ने के कारण लाभ समाप्त हो जाएंगे।

(2) दीर्घकाल में किसी भी फर्म को हानि नहीं हो सकती है -

अल्पकाल में तो फर्म को हानि इसलिए होती है क्योंकि उसे यह भाशा रहती है कि इस हानि को अवश्य में पूरा कर लेगी परन्तु यदि दीर्घकाल में फर्मों को हानि होगी तो वे उत्पादन बन्द करके उद्योग से बाहर चली जाएंगी जिससे उत्पादन का स्तर और वस्तु की पूर्ति कम हो जाएगी। पूर्ति कम होने से वस्तु की कीमत बढ़ेगी और फर्मों को पुनः सामान्य लाभ प्राप्त होने लगेंगे।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि दीर्घकाल में फर्म को केवल सामान्य लाभ प्राप्त होगा, जबकि एकाधिकार में असामान्य लाभ प्राप्त हो सकते हैं।

### (3) संतुलन अर्थ

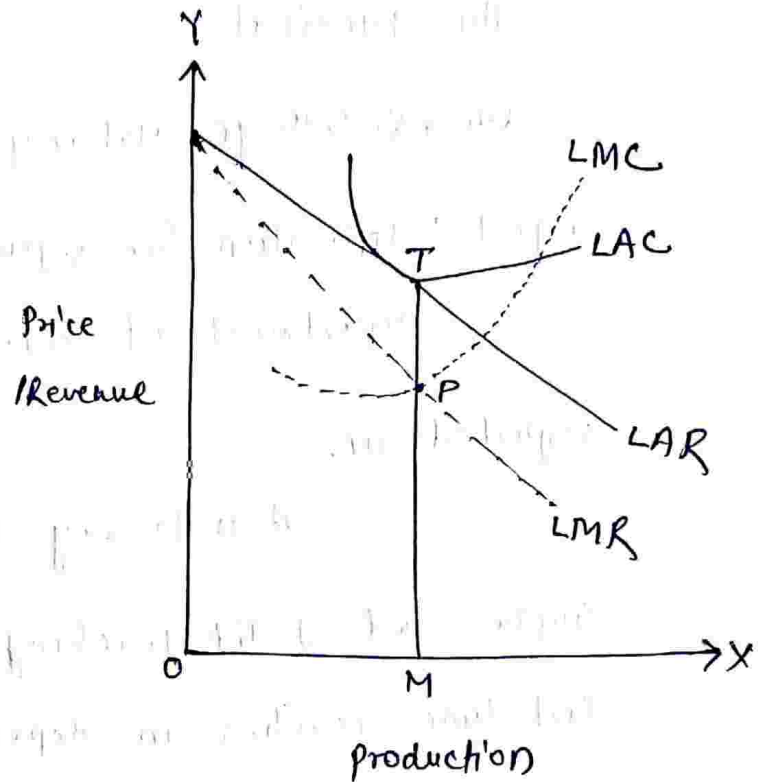
(i)  $MC = MR$  है,

अर्थात् सीमान्त लागत वक्र सीमान्त आय वक्र को काटता है।

(ii) संतुलन उत्पादन के

पश्चात्  $MC > MR$  है,

अर्थात् सीमान्त लागत वक्र सीमान्त आय वक्र को नीचे से काटे।



(iii) दीर्घकाल में फर्म को केवल सामान्य

लाभ प्राप्त होगा इसलिए AR (कीमत) AC के बराबर होगी।

### साम्यावस्था (Equilibrium)

चित्र में संतुलन बिन्दु P है जहाँ दीर्घकालीन सीमान्त लागत वक्र (LMC) और दीर्घकालीन सीमान्त आय वक्र (LAR) को काटता है तथा साम्य उत्पादन OM है। संतुलन बिन्दु पर,

(i) औसत आय =  $TM$

(ii) कीमत =  $TM$

(iii) औसत लागत =  $TM$

(iv) प्रति इकाई लाभ =  $TM - TM = 0$  (शून्य)

स्पष्टतः साम्यावस्था में, फर्म को केवल सामान्य लाभ प्राप्त हो रहा है क्योंकि वस्तु की औसत लागत और औसत आय (कीमत = AR) एक-दूसरे के बराबर है।

नोट:- बाजार की विभिन्न दशाओं में फर्म का दीर्घकालीन संतुलन

Perfect Competition	Monopolistic Competition	Monopoly
$MR = MC$	$MR = MC$	$MR = MC$
$AR = MC$	$AR = AC$	$AR > MC$
$AC = MR$	$AR > MC$	$AR > AC$

Page End

Page

